

मासिक

Shree Swaminarayan (Gujarati Monthaly)

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • वर्ष २० • पूर्ण अंक २३२ • अंक नवम्बर-२०२६

Volume no. 19, • Issue No. 232 • November 2026

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001 Rs.5/-

H.H.Acharya Shree
Koshalendraprasadji Pande

દીપાવલી એવં જ્ઞાનપર્વના મંગળમય
અવસર પ્રસંગે આપ સૌને અમારા રૂડા
શુભાશીર્વાદ સહ અનંત શુભેચ્છાઓ

સંવત ૨૦૮૩ આપ સૌ માટે મંગળમય
નીવડે તેવી પરમ કૃપાળુ શ્રી નરનારાયણ
દેવના ચરણકમળમાં અમારી નમ્ર પ્રાર્થના.

લા. ન. રજિનો સં. ૨૦૮૩નો અન્નકૂટ
ઉત્સવ "કોઠાર" (નિજ મં. તા. ૬ થી
૧૦ જાન્યુઆરી સુધી.

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

Shree Swaminarayan Temple, Kalupur
Ahmdabad - 380001 Phone : 22132170

Shree Swaminarayan Bagh, Memnagar,
Ahmedabad - 380052 Tel : 27478070





प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ५४ वे प्राकट्योत्सव के अवसर पर सभा में श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप का दर्शन ।



संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७, २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail :
magazine@swaminarayan.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - २० ● अंक : २३२ ● नवम्बर-२०२६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृतवचन	०६
०४.	आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज संकल्प जान गये	११
०५.	अहमदाबाद के समाहर्ता की भव्य सेवा	१३
०६.	धोलका मंदिर के लिये भूमिदान	१५
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से	१७
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२०

श्री स्वामिनारायण

अस्मदीयम्

सभी संतो, हरिभक्तो श्री स्वामिनारायण अंक के सभी सदस्यो, पाठको को नये वर्ष का श्री नरनारायणदेव की स्मृति के साथ और पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद के साथ नव वर्ष के अभिनंदन के साथ जय श्री स्वामिनारायण।

संवत २०८३ का नव वर्ष आप सभी के लिये सुखदायी, स्वास्थ्यप्रद, परिवार में सुख शांति बनी रहे और श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा में उत्तरोत्तर वृद्धि हो ऐसी श्रीहरि के चरणो में प्रार्थना है।

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से श्री नरनारायणदेव देश की उत्सवो की परम्परा सतत होती रहती है। और हम सभी भाग्यशाली है कि हम सब इसमें भाग ले तथा लेते रहेगे।

अभी थोडे दिनो में ६ जनवरी, २०२७ से १० जनवरी २०२७ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् अपने भविष्य के आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्ष स्थान से धोलका मंदिर में श्रीहरि ने स्वयं प्रस्थापित किये श्री मोरली मनोहरदेव का २०० वे वर्ष का ''त्योहार'' अधिक धुमधाम तथा उल्लास से मनाया जायेगा। श्रीजी महाराजने ९ महामंदिरो में स्वयं देवो की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा किये है। इसमें अपना अहमदाबाद, मूली, भुज, जेतलपुर का २०० वर्ष के उत्सव मनाये जा चुके है और पाँचवा धोलका मंदिर का २०० वर्ष का यह अन्तिम उत्सव है।

श्री नरनारायणदेव देश के समस्त सत्संग समाज के शहर, गाँवो में रहने वाले प्रत्येक हरिभक्त इस ''त्योहार'' में तन, मन और धन से सेवा देने हेतु पुरे धर्मकुल की विशेष आज्ञा है।

आइये हम सभी इस नये वर्ष के प्रारम्भ में कंधे से कंधा मिलाकर इस ''त्योहार'' की सेवा में भाग लेकर श्री मोरली मनोहर देव को खुश करे। अस्तु।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टूबर-२०२६)

६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनरायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

२० आश्विन सुद-१० विजया दशमी को ५४ वाँ प्रागटोत्सव परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में और प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महराजश्रीकी उपस्थिति में संत-हरिभक्त उल्लास पूर्वक मनाये।

२१ धोलका मंदिर आने वाले ''त्योहार'' के कार्यक्रमो के अवसर पर पधारे।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर लंगाटा नैरोबी में १० वें पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।



प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टूबर-२०२६)

६ परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

१० धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर २०० वर्ष के ''त्योहार'' की मीटींग अध्यक्ष पद से किये। श्री स्वामिनारायण म्युझियम।

११ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा द्वारा कथा पारायण की पूर्णाहुति पर पधारना।

१३ धोलका श्री स्वामिनारायण मंदिर ''त्योहार'' महोत्सव के स्थल का निरीक्षण हेतु पधारना।

१४ अहमदाबाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु पधारना।

१७ धोलका मंदिर ''त्योहार'' के प्रबन्ध मीटींग में पधारना।

२० प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ५४ वे पाटोत्सव को अपने उपस्थिति में मनाना। कालुपुर मंदिर।

२१ धोलका मंदिर आने वाले ''त्योहार'' के कार्यक्रमो के अवसर पर पधारे।

२५ शांतिग्राम (अदाणी) ''मंदिर'' के पाटोत्सव पर पधारना। श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर शरदोत्सव अवसर पर पधारना।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्री नरनारायणदेव के दर्शन हेतु औऱ पूनम की सत्संग सभा में पधारना।

२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव के अवसर पर पधारना।

३०-३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) ओकलैण्ड-न्युझीलैण्ड सत्संग शिबिर में पधारना तथा



श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृतवचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प.पू. महाराजश्री के ५४ वे प्रगटोत्सव के अवसर पर श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर सभा मंडप, ता. २०-१०-२०२६

प.पू. बड़े महाराजश्री : आदरणीय संतो और प्यारे सत्संगी भाईयो, कई वर्ष पहले इसी सभा मंडप में मैं अपने जन्म दिवस के विषय में बात किया था। मुझे याद आ गया। प्रतिदिन मंदिर में दर्शन करने तो आते ही थे। उस समय घनश्याम महाराज का भी दर्शन करते ही थे। तब अपने आराध्य सर्वावतारी अनंतकोटि ब्रह्मांड के अधिपति भाव से दर्शन करते थे। लेकिन जब जन्म दिवस होता है। उस दिन वह भाव नही रखते। उस दिन अपने दादा का दर्शन करते है। इस भाव से दर्शन करते है। यह ''दादा'' शब्द पू. बापुजीने दिया है। स्कूल जाते समय प्रतिदिन मंदिर नही आ सकते थे। अर्थात् अच्छे दिनो पर एकादशी हो, पूनम हो तब बापुजी आज्ञा करते कि दादा का दर्शन करके आओ।

हमारे दादा इतने समर्थ है कि जगत में कोई भगवान दिये है ? कि जो लिखित (राइटींग) गारंटी दिये है। कि मैं अपने भक्त की सात अकाल में सहायता करुंगा। इस तरह की गारंटी, महाराजने वचनामृत में (जे-५) लिखित में दिये है । लेकिन इस में एक शर्त (**Condition**) है। संसार की बड़ी बडी कम्पनियाँ विज्ञापन में गारंटी देते है। तथा नीचे सूक्ष्म अक्षरो में **Condition Apply** लिख देते है। आप को पढना पडता है । महाराजने भी **Condition** इसी रुप में लिखे है। सूक्ष्म अक्षर में नही लिखे है। **Condition** यह है कि ''नरनारायणदेव'' के होकर रहे तो।

आज आचार्य महाराजश्री का जन्म दिन है। आप सभी संत-हरिभक्त मिलकर नरनारायणदेव के चरणो में यही प्रार्थना करे कि भगवान हमारे परिवार के उपर खुश रहे। वचनामृत में भगवान शुध्ध बात कही है कि भगवान के पास से माँगे नही। एक वस्तु माँगे कि आप की कृपा बनी रहे। इस में सब कुछ आ जाता है। इतना ही माँगे कि आप की हमारे परिवार के उपर आचार्य महाराजश्री के उपर आप के उपर महाराज की कृपा बनी रहे। और नरनारायणदेव का विजय स्तम्भ दिगंत में लहराता रहे। इतने विनंती के साथ अब विराम दे रहा हूँ।

प.पू. लालजी महाराजश्री : विजया दशमी के इस पावन दिन पर अपने सभी के महाराजश्री और मेरे पप्पा के जन्म दिन के अवसर पर आप सभी हरिभक्त और

संत अधिक संख्या में शुभेच्छा देने आये है। इसके बदले में मैं अपने पूरे परिवार की तरफ से सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। स्थायी जो देव की निष्ठा है। जो भगवान का दिया गया सिद्धान्त है। और नीति (**Ethics**) है। यह जो कुछ मेरे जीवन में आया है। महाराज के द्वारा है। यह सत्य है। कारण सब कुछ कहने से नही होता है। यह क्रिया कार्य से होती है। केवल माईक पर बोलने से, चार आदमियो के कहने से नही होता है। बंद करमे में भी ऐसा **Action** अपना होता है। निष्ठा, सिद्धान्त **Ethics**, मोरल नैतिकता ये सभी बाते महाराजश्री के पास से ज्ञात है। यदि कोई मुख्य **Principle** (सिद्धान्त) है तो इनके जीवन का तो यही है। हमने तो समीप से देखा है। बचपन से देखे है। और यह वेखकर मुझे बेटा होने पर गर्व है। स्थायी रुप से सत्संग के लिये देश-विदेश में, दिन-रात मेहनत करते है। यह प्रसंशा नही हकीकत मैं है। यह देखकर कर कह रहा हूँ। हम सभी नरनारायणदेव से प्रार्थना करे कि आप का स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। प्रतिदिन २ से ३ घंटे तक व्यायाम करते समय साथ मैं ही रहता हूँ। फिर भी अच्छा रखे।

अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने धोलका ''त्योहार'' के लिये स्वयं सेवको के फार्म के बारे में तथा विजय ध्वज की स्थापना (ता. ६-१२-२०२६, शायं ४ बजे) पदयात्रा (ता. १३-१२-२०२६, तिरया वासणा गाँव से धोलका तक) हर प्रकार के मार्ग दर्शन के लिये जो समैया की पुरानी आफिस थी। उसे ''त्योहार'' के हेतु कार्यालय चालू है। इसका लाभ लेने के लिये। तथा ''त्योहार'' महापूजा इत्यादि अपने शक्ति के अनुसार तन, मन, धन से सेवा देकर जिस प्रकार पहले, पर्व, उत्सव जैसे को उल्लास पूर्वक मनाया गया था। उसी उत्साह के साथ ''त्योहार'' मनाने के लिये प्रेरित करे। ''त्योहार'' के अवसर पर हम सभी के जीवन में भजन-भक्ति तथा श्री मोरली मनोहरदेव और श्री नरनारायणदेव की निष्ठा बढे। ऐसी प्रार्थना के साथ सभी को प्यारा आशीर्वाद मिले।

प.पू. महाराजश्री : लालजी महाराजश्रीने बात कही कसरत की इसके बाद बड़े बापजीने याद दिलाया। लालजीश्री हमारे लिये कि किये थे तो आया (परिवारिक संवाद) इस में ऐसा था कि नारणभाई, लगभग ८ वर्ष की उम्र थी। और प्रातः काल उठाते थे। बाद में दौडना, यह सब जड से मिलता है। तथा आगे बढता रहता है। कुछ बढकर चलता है। मोटा बापजी लालजी महाराजश्री से ऐसा कहते थे कि मैं दौडता था। वह मुझे देखकर दौडने लगता था। बाद में खडा हो जाता था। बाद में बापजी कहते कि बात सत्य है न ? हाँ सही बात है। लेकिन बापजी से बोले यह सत्य नही है। सत्य यह है कि, बिन्दुराजा बेटी तो हमेशा पिता को प्यारी होती है। सही है ? बिन्दु राजा कहती थी कि मेरे पेट में दर्द है। दौड नही सकती हूँ। तो बापजी कहते थे कि बिटिया। तुम जाओ। इसे दौडने दो। यह छोटे-छोटे पारिवारिक यादे है। लालजी महाराजश्री और हम दोनो कसरत करते है। और करेगे भी। भगवान है। आनंद की बात है। बापजी ने कहा कि, कसरत में कभी की होगी। सत्संग मे थे नही कहे मैं दौडता हूँ। प्रसंशा करने के लिये नही कह रहा हूँ। सत्य मे बता रहा हूँ। किसी की नजर पडे या नही पडे। नरनारायणदेव की खुशी हेतु यह

अंक का डिजिटल आवृत्ति

अपना ''श्री स्वामिनारायण मैगजीन'' जनवरी-२०२७ से विदेश के सदस्यो के लिये डीजिटल हो जायेगी। आने वाले अंक मंदिर के **Whatapp** नम्बर अंक में प्रकाशित किया जायेगा। इसके बाद पत्रिका मात्र **Whatapp** द्वारा प्राप्त होगी। इसलिये अंक के सभी सदस्यो से आग्रह है कि अभी से डीजिटल कापी मगाँ ने के लिये। अपना ग्राहक नम्बर और **Whatapp** नम्बर लिखा दे। जो भक्त इसमें पंजीकृत होगे। उनको ही जनवरी-२०२७ से मैगजीन का डीजिटल आवृत्ति मिलेगी।

कार्य करते है। इसमें समय काल नही देखते है। परिस्थिति बस नही भी होती है। बुखार आ जाये। यह मोटा बापजी भी किये है। हमने भी किया है। और लालजी महाराजश्री भी करते है।

हम सभी भाग्यशाली है कि सम्प्रदाय के अंदर अहमदाबाद देश में दिन प्रतिदिन एक-एक प्रोजेक्ट होता रहता है। लालजी महाराजश्रीने त्योहार की बात किये। सभीने मेरी प्रशंसा किये है। लेकिन गर्व की बात यह है कि मुझ से अधिक उत्साह इन में है। जिस कारण से अधिक समय कसरत के लिये रख सकते है। ऐसा सरस उत्सव समैया स्वयं ध्यान रखकर कर रहे है। कितनी उन्नति अपने सम्प्रदाय में है। संत-हरिभक्त देख रहे है। संत तो अनुभव कर रहे है। छोटे से बड़े गाँव तक आज टोरडा की बात आई। दूसरे मंदिरो की बात हुई। छपैया तक कल करसनभाई मुझसे मिले। अश्विनभाई और कसरसनभाई उनके ठेकेदार लेकर बद्रिनारायण तक गये है। बोलिये ! अपने इस सम्प्रदाय में एक दादा खाचर एक पर्वतभाई थे। ऐसा नही। केवल करसनभाई, अश्विनभाई के लिये नही कह रहा हूँ। पूरे सम्प्रदाय के हरिभक्तो के लिये कह रहा हूँ। अपने बापुजी पर्थ से आये है। सुमात्रा से आते है। अलग-अलग देश-प्रान्त से आये है। आप उनावा से आये है। क्या कारण है जो एक दूसरे की नजदीक लाता है। सोचिए ! क्या बात है ? जो हमें एकत्र करती है। वह नरनारायणदेव है।

हम सब आते थे। तो रास्ते में जो भी कपडा होता था। वह नवरात्रि का होता था। भजिया, गाँठिया या फाफडा-जलेबी खाते थे। बिन्देश गाडी लाये थे। हम तीनो लोग उसमें आया। बिन्देश तो मुझे कहा ही था। हम बोले तीनों को लेकर चलते है। आप को लगता होगा कि प्रतिदिन नई गाडी। वह उनकी नयी गाडी थी। और प्रतिदिन हमारे पास नयी गाडी आये। अभी दिन में दो बार आयेगी। जो खुश हो खुश हो। जो जले उसे जलने दे। यह नरनारायणदेव का दरबार है। यह कंगाल का घर नही है। राजा के साथ रहकर गरीब, भगवान जैसे भगवान मिले है। बाद में भीख माँगे कैसा लगेगा ? तिलक-चाँदला वाले भीख माँगे ? किसी दिन देखा है आपने ? महाराज का बचन है, बड़े बापजीने कहा कि सात अकाल अर्थात् महारा आश्रित अन्न, धन, वस्त्र से कभी दु:खी नही रहेगा। फाँफडा-जलेबी खाते थे। आज भी कृपा करके नरनारयणदेव ने जलेवी दिला ही दी (श्रृंगार तथा आरती के समय) तनाव है कि भगवान इतना खा जायेगे ? सुगर बढ जायेगा ? भगवान का सुगर नही बढता है। हम खायेगे तो हमारा सुगर बढ जायेगा।

हमारे महंत स्वामी अभी दवा कराने गये थे ? उसे सर्विस भी कहते है। जयेशभाई कार्डियो सर्जन है जो मेरे मित्र है यह गर्व की बात है। बात हुई तो बोले आटेरी मे पूरा हाथ चला जाये। अर्थात् ब्लोकेज नही है। अर्थात् दस रोटी पर इतना घी, स्वामी ! यह तो घर की सभा है। इस लिये मुझे बात करने मे आनंद मिलता है। औपचारिक बात अच्छी नही लगती है। आप और हम भी अच्छे। अपने किया मैने भी किया। प्रतिदिन कथा झूठी-झूठी किये। एक पुरानी बात है। मै २२ से २३ वर्ष का था तो न्यूजीलैण्ड गया था। बडे पी.पी. स्वामी साथ में थे ।उनके साथ एक और साधु थे। उस संत को देखे तो उनका प्रतिदिन वजन बढे। बड़ी पी.पी. स्वामीने मजाक किया कि शास्त्री। आप का पेट भर जाता है। नारायणभाई आप की तरह कोई नही थे। जब हम न्जूजीलैण्ड -आस्ट्रेलिया गये। इस से बारह दिन एक स्थान पर रह जाते थे। टिकट के लिये पैसे रहे या ना रहे। उस समय की परिस्थिति भिन्न थी। दिनो तक की प्रतिक्षा करना पडता था। एक दूसरे का मुँह देखकर बैठे रहते थे। रास्ते की दूरी ज्ञात करते थे। कहाँ तक चलकर जा सकते थे ?

इसके बाद कुछ समय के बाद न्युजीलैण्ड गये । ८ से १० बेड भी आरुट पडी थी । मै सलाद खा रहा था । मैने कहा खाइये । सामने बैठे वाले से पूछना ही चाहिए । वनराज भगत थे । दूसरे लोग भी थे । कोई खाता नही था । ये साहब खा रहे थे । आज भी खाते है । मड्डा हो तो और अच्छा ! बैठे और खाये नही क्यो ? तो बोले घी के बिना कैसे खा सकते है । मुझे ज्ञात नही इसमें घी (**Ingredient**) हो, संतो को ज्ञात होता है । अनुभवी है । आप को गाँव में जाकर बनाना पडता था । वर्षा के काल में अभी तो सुखी हो गये है । मैं भी और हरिभक्त भी, बाद में कटोरी भरकर घी डाला कांतिभाई के पास मुझे ऐसा लगा थोडा डूबा-डूबाकर खायेगे । उन्होने पूरा कर दिया । दस वेडमी के लिये इतना घी । मुझे रात में धबराहट हुई की संतो के लिये टेडमिल (कार्डियो कसरत की मशीन) रखे । लेकिन शरीर अच्छा है । सब कुछ सामान्य आया । सभी संतो का नारमल आता रहे । क्योकि संत अपने अग्रिम माध्यम है । सम्प्रदाय के गहने है । शरीर पर ध्यान दे । संतो हाथ जोडकर सम्भालते है । अब पहले जैसा नही है । पहले धोलका में पूर्णप्रकाश शास्त्री थे । वह २० लड्डू खा जाते थे । आप ताली बजा रहे है तो दो खाकर दिखाये । उसके उपर खश-खश पडा हो । शेष बिस्तर के अलावा कुछ भी नही दिखता है । सही है न अभिषेक स्वामी ! आज की तरह छोटे लड्डू भी नही थे । नारंगी जितने बड़े स्वामिनारायण के चूरमा के लड्डू शुद्ध घी थी के, पाँच लड्डू खा लेने पर भयंकर नीदं शायद प्रातः तक उठे । आप को तो अनुभव होगा बापा ! पुराने पीढी को अधिक अनुभव है । लेकिनवे लोग खेत में जाते थे । जब कि हम सभी गद्दा-तकिया तथा चारपाई पर पड जाते है । हम सभी भाग्यशाली है । यह एक हास्य प्रसंग था ।

बाहर रास्ते में देखे तो कहने का मन आया है । गांव तथा राम की बात अलग है । गाँव का पूरा होने पर राम का प्रारम्भ होता है । प्रातः तक गरबा करे । उसकी श्रध्धा पर धन्यवाद । मुझे उतारकर दण्डवत करने का मन करता है । शर्दी हो जाये तो देखेगे । शेष रुकावट नही आयेगी । सब शौक समाप्त हो जायेगा । यह तो रास्ते की बात हुई । लेकिन शरीर पर ध्यान दे । मैं तो जन्म-दिवस मनाने के लिये रोक रहा था । मैं तो सोच रहा था कि प्रातः उठकर नरनारायणदेव का दर्शन करेगे । लेकिन लालजी नही माने । विशेषकर ये देव है । देव की प्रधानता है । सिद्धान्त है । अपनी परम्परा है । उसका पालन करना आवश्यक है । यही अपनी पूँजी है । स्थायी रुप से कहेगे । यादगार कहेगे । किस लिये ? बार-बार कहने से मिलता है । मुझे तथा आप को प्राप्त होगा । इस सम्प्रदाय में रहकर पूँजी पैदा करना है । यह अपनी बड़ी से बड़ी धरोहर है । इसका गर्व है । जीवनमें यह नही आये तो सब बेकार (**Useless**) है । आज कितना बड़ा संसार हो जाये । यदि देव का नही बन सके तो । सब कुछ कृत्य सब साधन माला और तिलक-चाँदला बेकार है । नकारात्मक नही बोल रहा हूँ । संसार में हो रहा है । बड़ा चाँदला करके करते क्या है ? हम सभी जातने है । इन लोगो के कारण सम्प्रदाय की क्रेडिट (साख) गिर रही है । बडे चाँदला करके किसी को लूट कर आ जाये ।

एक हरिभक्त अच्छे है । नजदीक के है । मै वहाँ पर गया । दूकान वाले ने बराबर लूट लिया । मै कहा कि मेरा नियम है । चांदला वाले के यहाँ से हाथ जोडकर वापस आ जाता हूँ । योग्यता का उपर वस्तु है । अपनी क्रेडिट होती है । मैने पहले भी कहा है । हमारे पैर जहाँ पडेगे । वहाँ पर पूरे सम्प्रदाय का पग होता है । हमारी गाडी किसी गल्ले पर रुक गई । तो पूरे सम्प्रदाय की गाडी वहाँ पर ही रुकेगी । आप उसे गल्ले पर बिडी पीयेगे तो पूरा कालुपुर बीडी पीने लगेगा । साधारण वस्तु है । हम सभी की जिम्मेदारी है । सत्संग के साथ जुडने पर पैर हमेशा सावधानी पूर्वक रखना चाहिए । यदि खराब जगह पर जायेगे तो पूरे सम्प्रदाय के उपर लांछन लगेगा । इस लिये पूरे सावधानी

से रहना चाहिए । भगवान ने हमे पात्र बनाया है तो उनकी मर्यादा का ध्यान रखना चाहिए । हमारी शक्ति बढे । इस लिये अपने संस्कार और परम्परा को महत्वपूर्ण स्थान दे ।

आनंद आया । आप सभी एकत्र हुए । भगवान है । आप है । भगवान आप को सुखी रखे । ''त्योहार'' आने वाला है । लालजी महाराज मेहनत कर रहे है । इच्छानुसार कुछ करे । अभी कपिल से बोल रहे थे । बात गरबा के टिकट की आयी है । लोगो को लगता होगा । हमारे पास गरबा का टिकट आता होगा । पहचान वाले कीसी ने कहा गरबा का टिकट ? मैने कहा । रख दे । अपना टिकट कटे नही इस पर ध्यान देना है । बाद में समाचार मिला कि साढे तीन लाख का एकपास । टेबल जैसा कुछ होता है । नवरात्रि में एक दिनका यह चार्ज है । इस प्रकार ''त्योहार'' में ११०००/- की महापूजा की बात की गयी । तो महापूजा का डिशकाउन्ट रेट है । सोचे स्वामीने ५०००/- कहा मैने कहा ५०००/- मे तो रिजार्ज होता है । अर्थात् पैसे की बात नही जुडने की बात है ।

श्री मोरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज को महाराज ने अपने करकमलो से भाल प्रदेश के लिये धोलका में बिराजमान किये थे । हम सभी को गर्व होना चाहिए । सत्य यह है कि धोलका पहले सक्षम था । लेकिन कालान्तर में लोग बावला, विरमगाम शहरो में चले गये । इस लिये यहाँ की स्थायीय प्रजा कम हो गयी । हम सपोर्ट करेगे तो मंदिर को सपोर्ट मिलेगा । इससे उसका जीर्णोध्धार होगा । उत्सव-समैया करके खर्च नही करना है । इसमें से बचत **F.D.** के लिये नही करना है । भक्तो की सुविधा की वृद्धि हेतु होना चाहिए । इस लिये लालजी महाराजश्रीने बीणा उठाया है । हम सभी सहयोग करे ।

तो आज के दिन आप सब मिले । अर्थात् हेपी बर्थ-डे ही है । आप सभी को **Happy Birth Day** भगवान को **Happy Birth Day** ब्रह्मानंद के प्यारे, मेरा दिन-प्रति दिन दिवाली । भगवान के मिलने से प्रतिदिन **Happy Birth Day**, दिवाली, पूनम सब कुछ है । घर सो जाये तो अमावस्या, मंदिर आ जाये तो पूनम । सब कुछ, ऐसा है । सभी हरिभक्तो-संतो को भगवान का आशीर्वाद ऐसी नरनारयणदेव के चरणो में प्रार्थना है । जय श्री स्वामिनारायण

अपने व्रतोत्सव

कार्तिक सुद-७ सोमवार ता. १६-११-२०२६ नाथद्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव ।

कार्तिक सुद-१२ शनिवार ता. २१-११-२०२६ देव प्रबोधिनी एकादशी उपवास, वडताल मंदिर श्री लक्ष्मीनारायणदेव और अहमदाबाद मंदिर रंगमहल श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव ।

कार्तिक सुद-१५ मंगलवार ता. २४-११-२०२६ मुकुटोत्सव पूर्णिमा, व्रत की पूर्णिमा, तुलसी विवाह, देव दिवाली ।

कार्तिक वद-२ गुरुवार ता. २६-११-२०२६ सुरेन्द्रनगर मंदिर पाटोत्सव ।

कार्तिक वद-५ शनिवार ता. २८-११-२०२६ बामरोली (म.प्र.), प्रयागराज (यू.पी.) और हिम्मतनगर मंदिर पाटोत्सव ।

कार्तिक वद-८ मंगलवार ता. १-१२-२०२६ ईडर और कानपुर (यू.पी.) मंदिर पाटोत्सव ।

कार्तिक वद-११ शुक्रवार ता. ४-१२-२०२६ उत्पत्ति एकादशी व्रत ।

कार्तिक वद-३० मंगलवार ता. ८-१२-२०२६ अमावस्या ।

मार्गशीर्ष (अगहन) सुद-५ सोमवार ता. १४-१२-२०२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२ पाटोत्सव ।

मार्गशीर्ष सुद-६ मंगरवार ता. १५-१२-२०२६ मकनसर श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव ।

मार्गशीर्ष सुद-७ बुधवार ता. १६-१२-२०२६ धर्नुमास प्रारम्भ, ठाकुरजी को थाल चढना ।

मार्गशीर्ष सुद-८ गुरुवार ता. १७-१२-२०२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कलोल (पंचवटी) पाटोत्सव ।

आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज संकल्प जान गये

– जे. पी. स्वामी (कोठारी स्वामी – कालुपुर मंदिर)



अपने आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी इस देश में आकर अपने सम्बन्धियो को जिस विधि से दान करते थे । यह देखकर उनके साथ आये सद्गुरु दयानंद स्वामी को चिंता होने लगी । वह सोचे, आचार्य महाराज को रोकना चाहिए । आवश्यकता से अधिक दे देते है । सगे सम्बन्धी के नहीं होने पर भी बडी मात्र में धन देने पर व्यवहार व्यवस्था पर प्रभाव पडेगा । अंत में हम सभी कोई बड़े सेठ नही है । अपने पास कोई जागीर भी नही है । जो कुछ आय है । गरीब हरिभक्तो से मिलती है । हरिभक्त भी ठाकुरजी के नाम पर दान देते है । इसी से अपना व्यवहार चलता है ।

इसलिये महाराज पर कुछ रोक लगे ? ऐसा अवश्य करना चाहिए । ऐसा स्वामी सोचने लगे । अंत में उन्होने ने सोचा कि महाराज के पास स्वयं न जाकर किसी अन्य को भेजना चाहिए । उन्हे देवा भगत उचित पात्र लगे । स्वामी को विश्वास था । देवा भगत समझदार व्यक्ति है । क्योकि जो बात आचार्य महाराज से होगी । वह बाहर नही जायेगी ।

अंत में दयानंद स्वामीने देवा भगत को बुलाया । उनके साथ सभी बात बताये । उनके मत मे भी यही योग्य है । अर्थात् विवेक और मर्यादा में रहकर आचार्य महाराज के साथ बात करने के लिये देवा भगत को भेजे ।

सायं काल के समय आचार्य महाराजश्री कोठारी लखा भगत के साथ बात कर रहे थे । वहाँ पर देवा भगत आकर बैठ गये । कोठारी तो बैठे थे । कोठारी जा नही रहे थे । और देवा भगत बात कह नही पा रहे थे । फिर भी बात करने की उत्कंठा जगी रही । इस प्रकार भगत बैठे बैठे उचे नीचे होने लगे ।

महाराज को यह बर्दास्त नही हुआ ।

'क्यो देवा भगत क्या बात है ? महाराज देवा भगत की तरफ देखकर बोले ।

''बस ऐसे ही'' देवा भगत महाराज की तरफ देखकर बोले लेकिन उनकी आँखे कोठारी की तरफ ही थी ।

'ठीक महाराज ! मैं अब जाउ, जय स्वामिनारायण ! देवा भगत को लाभ देने के लिये । कोठारी खडे होने लगे ।

'नही बैठिये' महाराज ने आदेश दिया । पुनः कोठारी बैठ गये । देवा भगत द्वन्द में पड गये । अन्ततः इनकी हा कीसी में ही बात करना पडेगा । ऐसा विचार करने लगे ।

'आप के आने का कारण मैं समझ गया हूँ । आपका द्वंद भी समझ में आ गया है । कोठारी अपने है । दूसरे नही । आप को खर्चा पर चर्चा करना है । अंतर्यामी जान गये । अयोध्याप्रसादजी ने खडा कर दिया । देवा भगत गद्गद् हो गये । उन्होने बात की तथा सत्संग की परिस्थिति भी समझाये ।'

'आप को तो ज्ञात ही है कि भगवान पुरुषोत्तम नारायण मेरे पिता है । और लक्ष्मी माता । फिर मुझे लक्ष्मी

की क्या चिंता है ?

इसका उत्तर तो देवा भगत के पास नही था । वह जय स्वामिनारायण बोलकर वहाँ से चल दिये । भगतजी जब जा रहे थे तब महाराज ने कहा जो यह बात करने के लिये भेजे है । उन्हे आप भेजिये ।

दयानंद स्वामी भगत की बात सुनकर खडे हो गये ।''महाराज आप को कुछ दण्ड देगे ? भगत ने पूछा ।

''दण्ड की चिंता संसारी को होता है । त्यागी को ऐसी क्या चिंता ? स्वामी विना अभिमान के बोले ''आप ने जो कहा, सत्संग का विचार करके बोले है । महाराज समझे ये बात नही है । यह कहकर स्वामी महाराज के पास गये ।

महाराज उनका ही रास्ता देख रहे थे । कोठारी को भी बैठा रखे थे । स्वामी आये तब महाराजजी दोनो को कोठार में ले गये । महाराज प्रेम पूर्वक स्वामी का हाथ अपने हाथ में रखकर चल रहे ते । कोठारी ने कोठार खोला । कोठारी और स्वामी देखते ही रह गये । अभी कोठार में इतना प्रकाश कैसे हो गया ।

कोठारी कुछ सोचे । या महाराज से कुछ कहे । उससे पहले दोनो का हाथ पकडकर महाराजजी कोठार में प्रवेश किये । अंदर जाने पर देखे की घनश्याम महाराज महगे वस्त्र तथा अति मूल्यवान आभूषण वाली किशोरावस्था की घनश्याम महाराज की मूर्ति सिमित कर रही थी । इतना धन तथा वस्त्र कोठार में देखकर स्वामी दयानंद और कोठारी चलित हो गये ।

दयानंद स्वामी को अपनी गणना तथा सोच पर गलत प्रभाव आना । केवल सत्संगीयो के देने से व्यवहार नही चलता है । यह बात भ्रम मे रह गयी । वास्तव में श्रीहरि स्वयं सब व्यवहार अन्तर्यामी बनकर चला रहे थे । यह बात उन्हे पूरी समझ में आ गयी । अपने चंचल स्वभाव के प्रति पश्चाप करने लगे । दोनो हात जोडकर क्षमा माँगने लगे । महाराज में ईश्वरीय अंश होना । उन्होने स्वीकार्य किया । वह बोले आप को मैं समझ नही पाया था । यह कहकर स्वामी महाराज को प्रणाम करने लगे ।

दण्डवत करते स्वामी को आचार्य महाराज खडा करके सीने से लगा लिये । गढपुर में भगवान स्वामिनारायण ने साबरमती गंगा मे जल रहे । तब तक लक्ष्मीकम न हो दिये बचन की बात कहे । तथा हाजराहजूर कृपा का विश्वास दिलाये । महाराज की ईच्छा भी । हम यहाँ पर मंदिर बनाने छपैया आये है । सब कुछ महाराज की ईच्छा से होता है । हम और मात्र निमित्त बनते है । आप के अंदर जागृत यह विचार भी श्रीजी महाराज की ईच्छा का परिणाम था । इस प्रकार महारजा अपनी कृपा को सभी को ज्ञान कराने के लिये । आप के द्वारा मन का समाधान किये । यह श्रीहरि का आयोजन था ।

''अब हमारे मन मे कुछ शंका नही है । न तो कोई शंका शेषरुपी है ? दयानंद स्वामी ने कहा ''आप के द्वारा किया गया खर्च हमे शंका नही करने देगा ।

''भगवान पुरुषोत्तम की इस क्षेत्र में एक दिन अधिक प्रसिद्धि होगी । यहाँ पर मंदिर बनाकर उसमें नारायण धर्म, भक्ति, घनश्याम महाराज और रामप्रतापभाई की मूर्ति को लगा देने से कार्य की ईतिश्री नही है । प्रभु के जन्म स्थान पर लाखो रुपया खर्च करके बड़ा रंगमहल बनाकर उसमें सुख सैया की स्थापना करना है ? रामनवमी, जन्माष्टमी, अन्नकूट, प्रबोधिनी इत्यादि उत्सवो के दिन लाखो लोगो का मेला लगेगा । यहाँ के नरनारायण सरोवर में स्नान करने के बाद घनश्याम महाराज का दर्शन करके छाप लेगा । वह स्वयं एवम् पित्रो सहित मोक्ष प्राप्त करेगा । श्रीजी महाराज की इसमें प्रसन्नता होने के कारण यहाँ पर हम सब कुछ करते है ।

आचार्य महाराजश्री के बात से दयानंद स्वामी पूर्णतया संतोष मिला । वह महाराज को प्रणाम करके अपने आसन पर गये ।

अहमदाबाद के समाहर्ता की भव्य सेवा

– शास्त्री हरिकेशवदास

''नरनारायण हरे, सच्चिदानंद प्रभु'' मंगल शब्दो की आवाज वातावरण में गुँज रही थी।

अहमदाबाद भद्र के किला की आफिस में कार्य कर रहे अंग्रेज समाहर्ता, एन्डयु डनलोप के कान मे यह शब्द गया। उसने अपने लिपिक से पूछा ''मोतीराव ! ऐसे मधुर शब्द कौन बोल रहा है। किस लिये बोल रहा है।''

''साहब जाने दे, ये स्वामिनरायण के साधु भिक्षा माँगने निकले है। उनके शब्द है। मोतीरावने कहा ?

''लेकिन इन शब्दो मे कितनी मिठास है। आओ साधुओ को बुला लाओ हमे देखना है।

मोतीराव ईर्ष्या करने वाली प्रवृत्ति वाले व्यक्ति थे। समाहर्ता के आदेश के कारण साधुओ को बुलाने हेतु जाना पडा था। साधु शांत तथा भव्य रुप सौम्य वेश भूषा देखकर समाहर्ताजी खुश हुए। आसन देकर प्रेम से पूछे कि आप कहाँ रहते है ? क्या क्रिया -कलाप करते है ? आप के गुरु कौन है ?

''भगवान स्वामिनारायण हमारे गुरु है। मेरा नाम मुक्तानंद है। हम गाँव-गाँव घुमते है। व्यसन-वासना के बंधन में बंधे आत्मा को छूडाकर प्रभु के भक्त बनाते है। आदर्श मनुष्य बनाना हमारी प्रवृत्ति है। अभी हम लोग काँकरिया के पास रहते है। मुक्तानंद स्वामी ने उत्तर दिये थे।

''हमारे गुरु भी गाँवो में धुमते है। अधर्मी का कल्याण करते है। पतितो को पावन करते है। अभी वे गढपुर में रहते है। अहमदाबाद में भी कई बार आये है। लेकिन कुछ समय पहले पेश्वा ने महाराज को अहमदाबाद आने के लिये मना कर दिये। इस कारण से वे नही आते है। मुक्तानंद स्वामीने कहा।

''अब तो पेशवा का शासन नही है। आप यहाँ उन्हे अवश्य बुलाये। अच्छा में आप की तरफ से विनय करुगा। मुक्तानंद वहाँ से चल दिये। इस प्रकार मुक्तानंद स्वामी का साहब के साथ परिचय हुआ। साहबने स्वामिनारायण भगवान की अहमदाबाद लाने के लिये कहे। मोतीराव के पेट में दर्द होने लगा। उनके हृदय में ईर्ष्या की आग जल गयी। वह मन में ही शर्माने लगे। स्वामिनारायण पुन: इस शहर में आयेगे। सभा करेगे। उपदेश देगे। इनका उपदेश सुनकर मानव, शराब, मांस, अनीती चोरी इत्यादी छोड देगे। तथा इनके भक्त बन जायेगे। अहमदाबाद में प्रभाव बढ जायेगा। मोतीराव मन में जलने लगे थे। उसके मन में आया कि कुछ समझाकर पेशवा सरकार का रोक आदेश चालू करा दे।

एक दिन अवसर देखकर बोले, ''साहब आप को अच्छी बात पर ध्यान दिला रहा हूं। आपश्रीने सहजानंद स्वामी को अहमदाबाद में बुलाने की छूट दी है। आप पुन: इस पर विचार कर ले। सहजानंद स्वामी की वाणी में अजब जादू भरा है। उनकी वाणी से कई पुरुष अपनी पत्नी परिवार, गृह सम्पति आदि का त्याग करके साधु बन जाते है। पूरे जीवन उनकी आज्ञा में रहते है।

''यह तो कठिन कार्य कहेगे कि लोगो के लिये अशक्य है। यह कृत्य देव भी नही कर पाते है। इस का त्याग करने वाली त्रिलोक विजेता ही हो सकता है। जिसकी वाणी सुनकर ऐसा भाव पैदा हो जाता है। उसका दर्शन कितना अलौकिक होगा ? ये जब अहमदाबाद आयेगे। तब उनका दर्शन करके अहो भागी हो जाऊगा। साहब खुशी व्यक्त कर रहे थे।

साहब की बात सुकनर मोती राव को लगा कि पासा उलटा हो गया। फिर एक दिन कहे कि, स्वामिनारायण अपने साथ युवक, जोरदार लडाके काठियो की बड़ी सेना रखते है। वह सेना के साथ आयेगे। इससे शहर की शांति भंग होगी। नये राज्य अंग्रेज कलेकटर को शंका मे ला दिये।

महा प्रभु स्वयं अहमदाबाद आने के लिये चल दिये है। अपने साथ विद्वान एवं मंडल तथा हथियार से युक्त काठी दरबारो की संख्या भी थी। और मनवेगी माणकी पर प्रभु विराजे है। अगल-बगल सोने के छडी वाले पार्षद है। कई भक्तो को मनोरथ पूर्ण करते हुए। प्रभु जेतलपुर पधारे है।

पवित्रता में नैमिषारण्य, रमणीयता में वृंदावन दिव्यता में बदरी आश्रम और सुंदरता में श्वेतद्वीप की झांकीदे। ऐसे जेतलपुर में पूरे संघ के साथ आराम किये। भोजन-

पान किये । पास में बैठे आधारानंद नाम के एक संत ने प्रभु से कहा - ''भगवानने आप को ऐसी कला दिये है । एक आप कवि और चित्रकार भी है । जैसे सोने मे सुगंध हो । आप कागज - कूची लीजिये । हम जैसा कहे वैसा आप चित्र तैयार करे ।

आधारानंद स्वामीने कागज और कूची लिये । भगवान स्थल तथा प्रसंग का वर्णन किये । देखते - देखते दृश्य तैयार हो गया । प्रभु ध्यान से चित्र को देखकर अपने प्रिय सेवक भधुजी को दे दिया । और सभी को चलने के लिये बोले ।

रास्ते में जय - जयकार हो रहा है । काफी समय के बाद आज स्वामिनारायण महाराज अहमदाबाद पधारे है । लोग बात कर रहे थे । रास्ते में चंडोला तालाब आया । चारो तरफ घने वृक्ष है । रंग-बिरंगे कमल खिले है । प्यासे अश्व तालाब में पानी पी रहे है । प्रभु एक वृक्ष के नीचे कुछ समय के लिये बिराजमान हुए ।

वहाँ सामने से धुल उडती दिखाई दिया । समाहर्ता दो-चार अंग रक्षको के साथ वहाँ आ गये । हथियारधारी काठीयो का काफिला देखकर समाहर्ता मोतीराव की बात पर शंका करने लगा ।

प्रभुने पूछा ''चिंता मे क्यो है ?''

कलेक्टरने कह । ''मुझे ऐसी सूचना मिली है कि सहजानंद स्वामी काठियो की सेना लेकर अहमदाबाद के तरफ आ रहे है मैं यह बात मानता नही था । लेकिन !

कलेक्टर आगे बोले उससे पहले प्रभु हँस कर बोले । आप को यह हथियार देख कर शंका हुई होगी । हमारे पार्षदो मे रहे हथियार हिंसक नही है । इन हथियारो की धार दया से पूर्ण है । क्षमा करना हमारा धर्म है । ये सभी इस में मानते है । जब दुर्जनो लोग ऐसी निर्माणी संतो को दुःख देते है । तो रक्षा करना उनका धर्म है । सिर्प डारने के लिये हमारे पार्षदो का हथियार है । हिंसा लडाई के लिये नही । प्रभु की अमृतमयी वाणी सुनकर कलेक्टर के मन में शांति आयी । और स्थिर हो गया । प्रभु ने पूछा ''क्या सोच रहे है ?''

कलेक्टर ने कहा : आप का दर्शन करके मेरे युवा अवस्था में घटित एक प्रसंग मुझे याद आ रहा है । एक बार में फ्रांस के जंगल में शिकार करने गया था । एक बाघ के पीछे मैं घोडा दौडाया था । वाघ ने मेरे उपर आक्रमण कर दिया था । उस समय मुझे घोडे सहित उठा लिये थे । मुझे दिव्य आकृति का दर्शन हुआ था । मै सुरक्षित बच गया । उस दिव्य प्रताप के कारण बचा । आज इस बात को वर्षो हो गया फिर भी आकृति धुमती रहती है । आप का दर्शन होने पर मुझे लग रहा है आप के मुख मुद्रा की तरह थी । आप ही मेरे जीवन के रक्षक है । ऐसा मुझे लग रहा है ।

कलेक्टर की बात सुनकर मंद - मंद हँसकर प्रभुने आधारानंद के पास से बनाया गया चित्र भगुजी के पास से लेकर कलेक्टर के हाथ में रखकर बोले ये प्रसंग है या दूसरा है ?

चित्र को देखते ही कलेक्टर साहब तो दंग हो गये । अरे ! यह मेरा बंगला, यह मेरा प्रिय बादाम का वृक्ष, जिसके नीचे मैं प्रायः बैठता था । वही जंगल जिसमें मैं शिकार करने गया था । इसी प्रकार मुझे उपर उठाया गया था । यह चित्र देखकर कलेक्टर प्रभु के चरणो में झुक गये । एन्ड्रयु डनलोप साहब निश्चित हो गया कि स्वामिनारायण साक्षात् परमात्मा है ।

ढोल-नगारे के साथ समैया करके प्रभु को शहर में लाया गया । अहमदाबाद के सत्संगियो के लिये आज आनंदका उत्सव था । पूरे शहर में कोने-कोने शक्कर बाँटा गया । और जयकार हो रहा था ।

दूसरे दिन कलेक्टर आकर प्रार्थना किये । प्रभु आप तो मेरे प्राण रक्षक है । मै आप की क्या सेवा करे ?

प्रभुने कहा : हमारा दूसरा क्या काम होगा ? लेकिन हमारे साधुओ के ठहरने के लिये अहमदाबाद में एक स्थान होना चाहिए. कलेक्टर ने कहा ''आप जहाँ, कहे जमीन देदे । कालुपुर नवा वास के पास रिक्त्र जमीन प्रभुने पसंद किये । कलेक्टर ने स्थायी तौर पर दस्तावजे कर शाला के सामने तीन शिखर का विशाल दिव्य मंदिर बनवाये । इस मंदिर में श्री नरनारायणदेव बिराजमान हुए।

इस प्रकार प्रभु का जमीन भेट-बक्सीस में देकर । अपना आत्मकल्याण करने वाले एन्ड्रयु डूनलोप अपने अहमदाबाद के पहले कलेक्टर थे । सत्संग के इतिहास में ये अमर हो गये ।

(श्री स्वामिनारायण मासिक फरवरी १९६८ में प्रकाशित लेख पर आधारित)

धोलका मंदिर के लिये भूमिदान

– शास्त्री अजयप्रकाशदास (धोलकाधाम)



श्रीहरिने वडताल में संवत १८८१ में कार्तिक सुद बारस के शुभ दिन लक्ष्मीनारायणदेव की अपने हाथो से स्थापना किये । इसके बाद चरोतर के हरिभक्त श्रीहरि के दर्शन के लिये वडताल आये । तथा षोडशोपचार करके श्रीहरि की पूजा करके श्रीहरि की पूजा करके हार पहनाये । आरती उतारे तथा साथ में लाये मिठाई मेवा, फल, आभूषण की सौगत दिये । उसी समय धोलका के हरिभक्त भी आये थे । उन्होने भी भक्ति पूर्वक पूजा किये । विप्र रेवाशंकरभाई केला भर कर गाडी से आये । वह श्रीजी महाराज को अर्पण किये । धोलका के सेवा से श्रीहरि खुश हुए ।

इस समय श्री रेवाशंकरभाई ने श्रीहरि से धोलका में मंदिर ब्नाने के लिये प्रार्थना किये । तथा धोलका में जमीन दान देने की तत्परता दिखाये । तथा साथ में आये हरिभक्त तन, मन, धन से सेवा करने की ईच्छा दर्शाया ।

श्रीहरि धोलका के हरिभक्तो की विनती प्रसन्नता से स्वीकारे और मंदिर में पधारने के लिये राधाकृष्णदेव की मूर्ति दिये । रेवाशंकरभाई जिस गाडी में केला लाये थे । उसी गाडी में मूर्ति को धोलका लाये । और अपने घर में इस मूर्ति को रखे ।

श्री रेवाशंकरभाई की ईच्छा थी कि शीघ्रता से धोलका में मंदिर बने । वे अपने घर की विशाल जमीन मंदिर के लिये कृष्णार्पण करे । और उसके बारे में संवत १८८१ विजया दशमी के दिन एक रुपया के स्टेम्प पर लिख कर दे दिये ।

विशेष जिस स्थान पर राधाकृष्णदेव की मूर्ति रखे थे । उस प्रसादी के स्थान पर वर्मतान में छत्री बनाकर चरणारविंद स्थापति है ।

इस लेख की नकल निम्नानुसार है ।

संवत १८८१ के साल में आश्विन मास सुद–१० को स्वामी सहजानंदजी महाराज हेतु ली. कस्बा धोलका के हरिभगत सत्संगि रेवाशंकर परजाराम निवासी कस्वा उंडापाडा का चकला के दो फलिया के नीम के पास कोर का मंदिर सभी धर्मशाला इत्यादि लिख रहा हूँ । इसके खुट का मध्य युगमणी कोरापोत के मध्य है । वहाँ स्वयं की मर्ध्य में खिडकी है । उस खिडकी का खुलना बंद है । इसके उत्तर दिशा में भायलाल का घर भट्ठे का कार्य करते है । इसके पश्चिमी भाग में खिडकी और ओटला इस मंदिर का है । ओटला के नीचे से पानी जाने का रास्ता है । इसके उपर लिखी उसी दिशा में मीठावाणिया की पोल हमसे थोडापास हाडा की हाथ है । मंदिर की जगह में धर्मशाला लगी है । इस में दो कमरे है । पूर्व की तरफ खिडकी है । उपर किसी धर्मशाला का पिछला भाग है । मंदिर के पास कुँवा है । इस मंदिर को कृष्णार्पण में कर रहा हूँ । मेरा कोई अधिकार नही होगा । यह मंदिर तथा इसके पास की जगह कुँवा हम खुशी से याद में लिख रहे है । कृष्णार्पन आप को दे रहा हूँ। वह हस्ताक्षर युक्त है ।

१ अतरे (यहाँ) मत्र १. अतरे (अत्रे) शाखा

१ रेवाशंकर परजाराम धोलका १ श्री सुरज शाखा

हरिभगत सत्संगी मतु १ भट नारणजी त्रिकमजी शाखा

उपर लिखा है । यह हस्ताक्षर है १ अंदरजी पजाराम शाखा

द: स्वयं हाथ से हस्ताक्षर किये है १ नरभेराम जीवा शाखा

(इस प्रकार लगभग आठ शाखा है।)

विशेष : इस मूललेख की जीराक्स मंदिर के मकान जमीन देने वाले सत्संगी श्री रेवाशंकरभाई के वंशजो के पास से प्राप्त हुई है। इस में आने वाले सामी (स्वामी) वरखे (वर्ष) कस्बो (तालुका) (दीसा) (दिशा) अतरे (अत्रे) अलाखो इत्यादि उस समय जो लिया गया था। उसी प्रकार लिखा गया है।

मूर्ति प्रतिष्ठा हेतु निमंत्रण :

थोडे ही समय में धोलका में मंदिर बनाने के लिये स.गु. पूर्णानंद स्वामीने नवी तथा चिनाई का कार्य शुरु कर दिये थे। लेकिन वह कार्य अपूर्ण रहा। (आज भी सभा मंडप की मुख्य सीढी बाये तरफ दस फूट दूर जमीन के अंदर नींव की ईट देख सकते है।)

इसके बाद धोलका में मंदिर के निर्माण की जिम्मेदारी स.गु. महानुभावानंद को सौंपा गया था। सम्प्रदाय में पहले से तैयार शिखरबद्ध मंदिर की निर्माण कला को आगे रखकर स.गु. महानुभावानंद स्वामी और संत मंडल कार्य प्रारम्भ किये। मंदिर की जगह के माप को ध्यान में रखकर अनुभवी कारीगरो की सलाह से अच्छा प्रबन्ध करके नये सिरे से नींव खोदी गयी। धोलका के हरिभक्तो द्वारा भक्ति तथा सहकार मिलता रहा। बाहर के हरिभक्त भी अच्छी सेवा दिये थे। धोलका के मंदिर को तैयार होने मे समय तो लगा। लेकिन अच्छा शिखरबद्ध मंदिर तैयार हुआ।

मंदिर तैयार हो जाने के बाद श्री रेवाशंकरभाई सहित अग्रणी हरिभक्त श्रीहरि से मिले। उनके आज्ञानुसार मूर्ति प्रतिष्ठा करने के लिये निश्चय किये। श्रीहरि अभी वडताल में रह रहे थे। यह जानकर रेवाशंकरभाई तथा अन्य हरिभक्त श्रीहरि के पास आये। धोलका के हरिभक्तो को देखकर श्रीहरि जान गये। तथा यहाँ पर आने का उद्देश्य भी पूछे।

श्री रेवाशंकरभाई दोनो हाथ जोडकर बात किये। और अंत में बोले ''धोलका मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है। अब आप आये और मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा की तिथि निश्चित करे। तथा अहमदाबाद, मूली मंदिर की तरह अपने करकमलो से मूर्ति रखे।

श्रीहरि उनकी बात सुनकर खुश हुए। तथा संतो-हरिभक्तो के साथ धोलका आने के लिये सहर्ष स्वीकार किये।

श्रीहरि धलोका आये। भव्य नयनाभिराम मंदिर की रचना देखकर खुश हुए। ऐसा कलात्मक तैयार करने के लिये स.गु. महानुभावानंद स्वामी की प्रसंशा किये।

श्रीहरिने धोलका गाँव से विद्वान ब्राह्मणो को बुलाकर मुहूर्त दिखवाये। मूर्ति प्रतिष्ठा के लिये संवत १८८३ वैशाख वद पंचमी बुधवार के दिन (ता. १५ मई १८२७) को निश्चित किया गया।

श्रीहरि के आज्ञानुसार प्रतिष्ठा महोत्सव की आमत्रण पत्रिका गाँव में भेजे। संत तथा हरिभक्त ने कहा इस उत्सव पर शीघ्र और अवश्य आये।

धोलका शहर में प्रतिष्ठा महोत्सव की तिथि निश्चित होने पर आनंद मंगल होने लगा। तेजी से तैयारी होने लगी।

आज मोरली मनोहर भगवान का २०० वाँ ''त्योहार'' महोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया जाये। इसके लिये महोत्सव के अध्यक्षश्री अपने भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री इस महोत्सव की पूर्व तैयारी के लिय संत-हरिभक्तो को साथ में रखकर उत्सव भव्यता से मनाया जाये। उस लिये लगातार प्रयास कर रहे है।

प्रयागराज श्री स्वामिनारायण मंदिर के नये (संयुक्त) महंतश्री कि नियुक्ति

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रयागराज (यू.पी.) के वर्तमान स.गु. महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी गुरु स.गु. स्वामी वामनप्रसाददासजी के साथ नये संयुक्त महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी गुरु स.गु. स्वा. उत्तमचरणदासजी (मूली वाले) को नियुक्त किया गया है।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

सभी हरिभक्तो की सुविधा के लिये

प.पू. आचार्य महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के संकल्प से अब

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के नये स्थापना दिन

हर वर्षे दि. २९ मार्च के दिन पर मनाया जायेगा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-अक्टूबर-२६

ता. १३-१०-२०२६ प.भ. गीताबेन हसमुखभाई पटेल (करजीसणवाले) वर्त - न्यु राणीप - अहमदाबाद।



"जिस प्रकार श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव या श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज इत्यादि सर्वोपरी श्रीहरि के द्वारा स्थापित स्वरुपो का दर्शन-सेवा से सभी के मनोरथ पूर्ण होते है। उसी प्रकार आठ नंबर के हाल में प्रस्थापित श्रीहरि की नित्य पूजा में पूजित श्री नरनरायणदेव की प्रसादी की चल स्वरुप की मूर्ति को अभिषेक करने से, दर्शन से भक्तो के तमाम शुभ संकल्प श्रीजी महाराज पूर्ण करेगे। यह हमें विश्वास है।"

- प.पू. बड़े महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण भगवान के द्वारा स्वयं पूजित हाल नं. १ मे प्रतिष्ठित प्रसादी के हनुमानजी की समूह पूजा तथा अभिषेक का प्रबन्ध ता. ७-११-२०२६ को शनिवार के दिन प्रातः ८-३० बजे किया गया है। पूजा तथा अभिषेक का लाभ लेने वाले ईच्छित हरिभक्त आफिस में सम्पर्क करें।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "हमें अपने उपर 'दया' करना है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

मात्र ''द्रष्टिकोण'' बदलने से ''उद्वेग'' कम और अधिक होता है। मान ले की भौरा और मधुमक्खी आप के पास आये। तो हमें काटने की डर लगती है। इस लिये उसके उपर गुस्सा आता है। हमे काटने आती है। उसके बदले में ऐसा सोचते है कि हमारे पास आती है। तो क्रोध चला जाता है। इस लिये प्रत्येक विषय में यह लागू नही होता है। लेकिन जहाँ आवश्यकता हो तो वहाँ से मन की शांति के लिये दृष्टिकोण बदलने का प्रयास करना चाहिए।

यह जो मानव शरीर हमें प्राप्त हुआ है। जिसका जो कर्म है। उसी के आधार पर जीवन मिलता है। इस शरीर को महाराज ने नियत समय दिये है। इसके साथ कई संशाधन भी दिये है। प्रारब्ध कर्म कितना भोगना है। वह पूर्ण हो जाने के बाद यह शरीर समाप्त हो जाती है। मनुष्य प्रारब्ध भोगने के लिये ही जन्म लेता है। समय का हमें ज्ञान नही होता है। जितना समय मिला है उसी के आधार पर सुख-दु:क भोगना पडता है। इसके अनुसंधान में सभी संयोग भी अपने आप बन जाते है। हम जो सोचे भी नही होगे। वैसी घटना बन जाती है। यही प्रारब्ध भोगना होता है। जीवन में ऐसी घटना घटे तो विचलित नही होना चाहिए। भगवान से प्रार्थना करना चाहिए। ''कि आप हमारे साथ रहे।'' और द्रष्टिगोण बदलने का प्रयास करना चाहिए। भगवानने हम सभी को मानव योनि में जन्म दिये है। तो सभी मानव को समान मिलना चाहिए। क्योकि ? सभी मनुष्य है। लेकिन ऐसा नही होता है। देखे एक माता-पिता के चार बच्चे होते है। चारो के माँ-बाप एक ही होते है। लेकिन बच्चो की उम्र अलग-अलग होती है। सभी बच्चो के जीवन की परिस्थिति नही बनती है। क्यो ? सभी अपना प्रारब्ध भोगने के लिये आते है। यदि कभी जीवन में कोई अप्रिय घटना हो जाये। या ना पसंद परिस्थिति आ जाये तो मनुष्य को भक्ति-भजन कम नही करना चाहिए। लोग कहते है यह हमारे साथ ऐसा क्यो हो गया ? लेकिन ऐसा नही विचार करना चाहिए। भजन-भक्ति जो है यह अपने आत्मा के कल्याण के लिये है। जो घटना हुई है वह आपका प्रारब्ध है। कई लोगो को लगता है कि अभी हमारे जीवन में क्या बाकी है ? हमे अभी कितना कष्ट भोगना है। ऐसा डर कर नही रहना चाहिए। ऐसा नही सोचना चाहिए। जो होने वाला है वह तो होगा ही। वह निश्चित है। उसे हम रोक नही सकते है। जितना प्रारब्ध होता है। उसे पूरा करने के लिये भगवान साथ देते है। शरणागत की भगवान साथ देते है। प्रारब्ध माफ नही करते है। भगवान मानव रुप में इस पृथ्वी पर आते है। उन्हे भी प्रारब्ध भोगना पडता है। यह सब हमें सिखने के लिये होता है। कुछ लोगो को क्या होता है। डर के कारण धर्म का पालन करते है। उसे ''धर्मभीरु'' कहा जाता है। कुछ लोग ''धर्म वत्सल'' होते है। अर्थात् धर्म पालन के प्रति प्रेम। कई लोग धर्मशील होते है। धर्मशील अर्थात् स्वभाव से धार्मिक होते है। कुछ लोगो का जीवन धर्मशील बन जाता है। स्वयं जीवन उनकी धर्ममय हो जाता है। हमें जो प्रारब्ध यहाँ पर भोगना है। उसी प्रकार परमात्मा हमारी शरीर समय और साधन देते है। सब कुछ घटित होता जाता है। स्वयं यह ज्ञात भी नही होता है। भगवान ही केवल अर्न्तयामी है। जो हमारे आत्मा में रहकर हमारे आत्मा का नियमन कर रहे है। यह शरीर आत्मा का घर है। इसी प्रकार आत्मा परमात्मा का घर है। अपना घर स्वच्छ रहे तो अच्छा लगता है। आत्मा भी परमात्मा का घर है। तो हमे अपनी आत्मा को धर्मसहित भक्ति करके शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। १००% सच्चे हृदय से शरणागत हो जाये तो परमात्मा अनेक जन्मो के पाप को नष्ट कर देते है। लेकिन प्रारब्ध का नाश नही करते है। उसे भोगना पडता है। आप ने अच्छे कर्म किये है। इस कारण से मानव शरीर मिला है। इसमें भगवान की कृपा मिली है। भगवान को ऐसा लगता है कि यह मनुष्य मेरी शरणागति में है। सच्चा है। निर्दोष है। तो इसका प्रारब्ध सभी पूर्ण कर दूँ। इसे मैं अपने साथ अपने घर ले जाऊ।

इस प्रकार महाराज ने हम सब के उपर दया किये है। लेकिन हमे ऐसा याद नही होता है। हमें इस सत्संग की प्राप्ति हुई है। यह भगवान की कृपा है। १००% आधिनता में कैसे रहे। धर्म का पालन कैसे करें। यह सब ज्ञान सत्संग में आता है। रामचरित मानस में तुलसीदास की चौपाई है कि

बिनु सत्संग विवेक न होई
प्रभु कृपा बिनु सुलभ न सोई

सत्संग के बिना खराव अच्छा का प्रभाव, विवेक समझ में नही आता है। और भगवान के कृपा विना सत्संग की प्राप्ति सुलभ सहजता से नही होती है। हमें यह सत्संग सरलता से मिला है। यह भगवान की कृपा है। इससे पहले सबसे बड़ी कृपा यह है कि मानव शरीर मिला है। मानव शरीर के विना भजन-भक्ति कीर्तन यह सरल नही है। पमरात्मा ने मानव शरीर दिये है। और सत्संगि के घर जन्म दिये है। यदि सत्संगि के घर जन्म नही हुआ है तो भी किसी के माध्यम से सत्संग का योग हुआ है। कैसा सत्संग मिला है। यह सब बड़ी ''कृपा'' यह है कि नरनारायणदेव मिले है। भरत खंड के राजा घर बैठे मिल गये है। आपने कोई ऐसी साधना नही किये है। भगवान ने हम सब के उपर इतनी दया किये है। तो हमे भी अपने उपर दया करना है। बहनो को घर में कितना काम होता है। श्वास लेने का भी समय नही मिलता है। कभी कार्य करके शांति से बैठे होने पर कोई बुलाता है तो दौडकर जाते है। क्योकि ? घर के सदस्यो का लगाव होता है। लगाव होना चाहिए। इससे घर टूटता नही है। उपर की जिम्मेदारी के प्रति लगाव होना चाहिए। हम अपना सोचते नही है। यह अधिक आसाक्ति होती है। आत्म कल्याण के लिये स्वार्थी बनना पडता है। महाराज ने स्वयं के कल्याण के लिये बोले है। आत्म कल्याण के लिये सोचना नही तो मानव जन्म बेकार हो जायेगा। यह सोचना कि लाख चौरासी योनि में जन्म लेते लेते अब थक गया हूँ। अब मुझे आराम करना है। तब अपने उपर दया आयेगी। तब आध्यात्मिक मार्ग पर चलेगे। हम सत्य हृदय से १००% शरणागत होकर मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। इसे पूरा करने में भगवान आप के साथ रहेगे। आप को अपने घर ले जायेगे। अब अपने पर दया करके अपना प्रारब्ध पूर्ण करके चले जाये।

●

गोपाल योगी

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, ता. कडी)

(श्रीहरि वन विचरण गतांक से प्रारम्भ)

द्वादशी के दिन पुलहाश्रम में से मुक्तिनाथ को नत मस्तक होकर आगे प्रयाण किये। आगे जाते जाते कई दिनो के बाद एक योगी का आश्रम आया। उस योगी के पर्ण कुटीर पर वर्णीराज जाते है। हजारो वर्ष से गोपाल योगी तपस्या कर रहे है। पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन के लिये। भूख लगने पर बन के फलो को खाते है। प्यास लगने पर झरने का पानी पीते है। वस्त्र में कपिन के अलावा कुछ नहीं था। ऐसे योगीराज वर्णीराज को आते देखकर लगता था। कि पुरानी पहचान हो। लोग आलिंगन किये। तथा हर्षित हुए। वर्णीराज भी इस संत से मिलकर अति आनंदित हुए। योगीने वर्णीराज को अष्टांग योग सिखाये है। उन्हें क्या सिखना है। लेकिन जिसके पास विद्या हो उससे अवश्य ग्रहण करना चाहिए। श्रीहरि यह लीला करके दिखाये है। यह देखकर गोपाल योगी सोचे कि यह कोई मानव नही है। ये भगवान नारायण मुझे दर्शन देने के लीये पधारे है। वह इस बात को अपने मन में दृढ करते है।

अभी तक अष्टांग योग के साधना केवल चार लोग जातने है। (१) श्री कृष्ण भगवान (२) गोपाल योगी (३) भगवान स्वामिनारायण (४) गोपालानंद स्वामी इस प्रकार यहाँ पर वर्णीराज एक वर्ष तक रहे। आश्रम के चारो तरफ हिंसक जीव थे। भरवाड (गडेरिया का घर) घर था। हिंसक जीव गडेरिया की गाय उठा ले जाते थे। भरवाड वंदना करने आया। तब वर्णिराजने कहा शंख बजाये। हिंसक प्राणी भाग जायेगे। योगीराजने शंख बजाया। हिंसक प्राणी भाग गये। ग्वाल सुख से रहने लगा। वर्णीराजने गोपाल योगी को आत्मतत्व का ज्ञान दिये। पंचदेह का त्याग कराके परमधाम को ले गये। और्धवदैहिक क्रिया करके वर्णीराज चल दिये।

एक संत का तप, ज्ञान, निष्काम व्रत और निःस्पृहिता देखकर वर्णीराज चल दिये। परमेश्वर के रुचि के अनुसार ऐसी क्रिया करो कि परमेश्वर स्वयं चलकर आये। परमकृपालु परमात्मा को शुद्ध भाव से याद करे। कुछ माँगना ही नहीं पडेगा। सब चिंता श्रीहरि करेगें।

सत्संग समाचार

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ५४ वां प्रागटोत्सव मनाया गया

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर के प्रसादी सभा मंडप में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में, अधिक संख्या में संत और हरिभक्तो की उपस्थिति में श्रीहरि के ७ वें वंशज श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प्रातः स्मरणीय अपने प.पू. आचार्य महाराजश्री का ५४ वाँ प्रागट्योत्सव दिव्यता से मनाया गया।

प्रातः सवा आठ बजे श्रीहरि के तीन अपररुप का आगमन लाल कारपेट बिछाकर ढोल की आवाज और शहनाई की सुंदर धुन साथ आनंद छा गया। उत्साह प्रेरक गीत और आगमन की घडी की प्रतिक्षा करते संत-हरिभक्त और सांख्ययोगी बहने (मर्यादामें रहकर) मनाये थे। तीनो स्वरुप तीनो भाग में श्रीहरि के स्वरुप की श्रृंगार आरती की गयी। तथा भाव से दर्शन किये थे। पूजारी ब्रह्मचारी मंडलने ठाकुरजी को सुनहाली तीर के साथ धनुष बाण और ढाल तलवार आदि शस्त्र धारण करवाये। विजया दशमी के दिन शस्त्र पूजा भी सहजता से की गयी।

श्रीहरि के तीनो स्वरुप अच्छे रुप में श्रृंगार करके सभा मंडप में बिराजे, सर्व प्रथम जेतलपुर पाठशाला के भूदेवो ने स्वस्ति वाचन के साथ पूजा किये। इसके बाद प.भ. श्रीरामजी केसरा वरसाणी (सामतरा-कच्छ) यजमान परिवार ने पूजन किया था। मोटेरा के विद्वान संत, ट्रस्टी, अग्रणी हरिभक्तो ने फूलहार से पूजनक रके यजमान परिवार ने धर्मकुल की आरती उतारे थे। अहमदाबाद, जेतलपुर, वडनगर, ईडर, टोरडा इत्यादि धामो के महंत स्वामीयोने प.पू. महाराजश्री के प्रगट दिवस की शुभ कामना दिये थे।

टोरडा मंदिर के महंत शा. स्वामी सिध्धेश्वरदासजी के प्रयास से मंदिर संकुल का विस्तारीकरण का कार्य चल रहा है। उसके सहयोग के रुप में अपने पूर्व ट्रस्टीश्री रतिभाई खीमजीभाई पटेल (मेडा) टोरडा मंदिर के बगल के दो मकान अपने नाम खरीदकर दोनो आराध्य देव को अर्पण करके दस्तावेज उनके द्वारा प.पू. महाराजश्री के करकमल में अर्पण करके दे दिये। यजमान परिवार तथा अग्रणी हरिभक्तो का सम्मान किया गया था।

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री तथा प.पू.अ.सौ. प.पू. मातुश्री हवेली में बिराजकर समस्त स्त्री भक्तो को दर्शन पूजन का दिव्य सुख दिये।

अंत में, तीनो स्वरुपोने उपस्थित समस्त भक्त समुदाय को आशीर्वाद दिये। सभा संचालन शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (नारायणघाट)ने सम्भाला था।

महंत स्वामीने पूरे मंडल से पधारे सभी संतो-भक्तो के लिये भोजन प्रसाद आदि की अच्छी व्यवस्था किये थे। (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अहमदाबाद मंदिर में शरदोत्सव मनाया गया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में आश्विन सुद-१५ शरद पूर्णिमा को शायं भव्य शरदोत्सव मनाया गया। प्रसादी के विशाल चौक में चन्द्र की शीतल छाया में श्वेत वस्त्र में मंडप में श्रीहरि को विराजमान करके श्रीहरि को विराजमान करके श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ने भव्य ओच्छव किये थे। हरिभक्त भाई-बहन सम्प्रदाय के मर्यादा में रहकर रास गरबा किये थे। संत-हरिभक्त विशाल संख्या में चौक में पधार करके लाभ लिये थे। इस में सभी को दूध-पौवा (चुऊरा) का प्रसाद बांटा गया था।(कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी की प्रेरणा से आगामी ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में ता. २७-९-२०२६ रविवार के दिन संत हरिभक्तो, भाईयो-बहनोने समप्रदाय की मर्यादा में रहकर पालन किये। धोलका में श्रीहरि के स्वयं के करकमलो से स्थापित श्री मोरलीमनोहर देव हरिकृष्ण महाराज की २०० प्रदक्षिणा की गयी। तथा प्रसादी के स्थानो का दर्शन किये थे। प.भ. विशालभाई गोरसिया यजमान पद से मंगल मंदिर मानव सेवा परिवार के निराधार भाई-बहनो को भोजन कराया गया था। तथा उसी दिन अपने श्री स्वामिनारायण

म्यूझियम में एप्रोच सत्संग समाज के भक्तगण समूह महापूजा का लाभ लिये थे।

इसी दिन मंदिर के सक्रिय उत्साही युवको के आयोजन से बालको में एकता, खेलभावना, साहस, खेल, कूद के प्रति रूचि के गुण आये। ऐसे शुभ उद्देश्य से अहमदाबाद पूर्व विस्तार के अपने मंदिरो के बाल मंडलो के लिये। बाक्स क्रिकेट लींग (सीझन-२) का आयोजन किया गया था। इस में एप्रोच बापूनगर, हर्षद कोलोनी, निकोल, नरोडा और वस्त्राल गुरुकुल के बच्चो की कुछ ६ टीम भाग ली थी। इस में से हर्षद कालोनी टीम विजयी तथा नरोडा टीम उप विजेता टीम धोषित की गयी। महंत शा. स्वामी धर्मनंदनदासजी तथा कोठारी स्वामी के हाथो से विजेता टीम को गोल्ड ट्राफी तथा पाँच श्रेष्ठ खिलाडियो को प्रतिकात्मक ट्राफी तथा प्रथम द्वितीय और तृतीय विजेता टीम के प्रत्येक खिलाडी को क्रमानुसार गोल्ड, सिल्वर और ब्रोन्ज मेडल से प्रोत्साहित किया गया था।

BCL समिति के युवक तथा बाल मंडल के संचालक के सहयोग से कार्यक्रम अच्छे से पूर्ण किया गया। भाद्र मास को गणपति उत्सव तथा ठाकुरजी का जलझीलनी उत्सव भी उल्लास पूर्वक मनाया गया था।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकालोनी में २०० मिनट की धून

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. ३-१०-२०२६ के दिन आनेवाले धोलका ''त्योहार'' के अवसर पर २०० मिनट की षडक्षरी ''स्वामिनारायण'' महामंत्र की धून की गयी थी।

इस अवसर पर कालुपुर मंदिर से महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा धोलका मंदिर से महंत शा. स्वामी सत्यसंकल्पदासजी संतो का मंडल समूह पधारकर आशीर्वाद दिये थे। भाद्रमास के गणपति के उत्सव को उल्लासपूर्वक मनाया गया था।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

कांकरिया रामबाग श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्राध्धपक्ष में विशेष भजन-भक्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसादजी के मार्गदर्शन में यहाँ के हरिभक्त श्राद्ध पक्ष में विशेष धून-भजन, कीर्तन आदि किये थे। अपने मंदिर में सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर रुप से होती है।(महंत स्वामी - कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर प्रसादीधाम पाटण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से ता. २७-९-२०२६ रविवार के दिन यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में अपने धोलका मंदिर के आगामी ''त्योहार'' के उपलक्ष्य में महाअन्नकूट बनाकर ठाकुरजी को रखा गया था। वह प्रसंग सुंदर रुप से पैक करके दरिद्रनारायणो को खिलाया गया था। कटकिया वाड प्रसादी के अपने मंदिर में २०० मिनट का महामंत्र धून का सुंदर आयोजन किया गया था। इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी शा. पी.पी. स्वामी, नारणघाट महंत स्वामी, ठाकुरजी के पूजारी ब्रह्मचारी स्वामी और स्वामी जयप्रकाशदासजी आदि संत मंडल ने कथा वार्ता का लाभ दिये थे। ऊँझा से सांख्ययोगी हंसाबा, बनीताबा बहनो को सुंदर लाभ दी थी। इस अवसर पर पाटण (पुराना मंदिर) ऊँझा, सिद्धपुर, मोटप, चाणस्मा, मंडलोप, वेणुपुरा, अंबाला, दियोदर, भाभर, डीसा आदि गाँव के हरिभक्त आये थे।(कोठारीश्री पाटण मंदिर)

केवल धर्मादा के लिये QR Code



अहमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव के कोठार में अपना दशांश-विशाश धर्मादा के लिये यह QR Code है। जो मात्र धर्मादा के लिये है। सभी हरिभक्त ध्यान दे।

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

भादरवा सुद-१ प.भ. कामिनीबेन अनीलभाई व्यास (नरोडा), प.भ. कोकीलाबेन मफतभाई पटेल (सुघड), प.भ. घनश्यामभाई आदरभाई पटेल (शीलज), प.भ. जय देवजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. केसरबाई करशनभाई गोरसीया (बळदीया-कच्छ) । **भादरवा सुद-२** प.भ. जगदीशभाई हरिभाई कोराट (बगसरा), प.भ. किरीटभाई कांतिभाई पटेल (देलवाडा), प.भ. ईश्वरभाई त्रिभोवनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. सविताबेन गोविंदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. काळाभाई गोविंदभाई पटेल (मारुसणा), प.भ. पोदीबेन जेठाभाई पटेल (लालोडा) । **भादरवा सुद-३** प.भ. जसवंतभाई भीखाभाई चोकसी (अहमदाबाद), प.भ. ध्रुवल मिलनभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. बळदेवभाई जमनादास पटेल (डांगरवा), अ.नि. स्वामी मुकुंदजीवनदासजी (दिल्ही) । **भादरवा सुद-४** प.भ. उषाबेन राजेशभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. विमळाबेन व्रजलाल सोनी (अहमदाबाद), स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी (नाथद्वारा-पोरडा), प.भ. किशोरभाई भीखाभाई क्याडा (नवा नरोडा), प.भ. अ.नि. अंबाबेन भोगीलाल पटेल (केनेडा), प.भ. कल्पेशभाई परसोतमभाई पटेल (भावपुरा) । **भादरवा सुद-४/५** प.भ. रजतकुमार आशिषभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. अ.नि. छगनभाई नाथजी चौधरी (बालवा) । **भादरवा सुद-५** वर्णीराज यात्रा संघ (दहींसरा-कच्छ), प.भ. कनुभाई भावजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **भादरवा सुद-६** प.भ. अ.नि. कंचनबेन मोहनभाई धडुक (निकोल), प.भ. अ.नि. भगवतीबेन गणपतभाई पटेल (भोजपरा) । **भादरवा सुद-७** प.भ. बळदेवभाई मावजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. बळदेवभाई लावजीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. विरेन्द्रसिंह प्रदीपसिंह चुडासमा (जामनगर) । **भादरवा सुद-८** प.भ. अ.नि. नाथजीभाई ईच्छाराम शुक्ल शिष्य मंडल (उमरेठ) । **भादरवा सुद-९** प.भ. अंकुरभाई ईश्वरभाई सुहागीया (अहमदाबाद), प.भ. मणीभाई जेठाभाई चौधरी (बदपुरा), प.भ. अशोकभाई कनुभाई कानाणी (सुरत), प.भ. मंगळभाई धरमदास पटेल (डांगरवा), प.भ. रजनीकांत ईश्वरभाई पटेल (लवारपुर) । **भादरवा सुद-१०** प.भ. अ.नि. कुँवरजी गागजी गोरसीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई रतीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. मनोजकुमार कुँवरजी पटेल (मानकुवा-कच्छ), प.भ. अ.नि. लाडुबेन हरजीभाई पटेल (अहमदाबाद) । **भादरवा सुद-११** प.भ. केसरा वालजी हिराणी - रामबाई केसरा हिराणी (कोडकी-कच्छ) । **भादरवा सुद-१२** प.भ. नीतीनभाई घनश्यामभाई पटेल (झारोला), प.भ. हसुमतीबेन मनुभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. जयेन्द्रभाई अलैया (सुरेन्द्रनगर), प.भ. अ.नि. समजुबेन केशवभाई लखाणी (सुरत), श्री नरनारायण ईन्फ्रा प्रा.पी. प.भ. जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), महिला मंडळ (सुरत) । **भादरवा सुद-१३** प.भ. लालजी देवजी भुवा सुखपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. विरजी करशन राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. अ.नि. रसिकभाई अंबालाल पटेल (मोखासणा) । **भादरवा सुद-१४** प.भ. शिवजी लालजी वोरा (मानकुवा-कच्छ), प.भ. कांतिलाल अंबालाल पटेल (माणसावाळा) । **भादरवा सुद-१५** प.भ. जशोदाबेन रमणलाल पटेल (रनेला), प.भ. वालजी शिवजी रुपारेलीया (सुखपर-कच्छ), प.भ. मगनभाई वी. गांगाणी (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणभाई विठ्ठलदास पटेल, प.भ. भूपतलाल जेठालाल जडीया (राजकोट), प.भ. शोभनाबेन अल्पेशभाई कथीरीया (सुरत) ।

भादरवा वद-१ प.भ. डॉ. मयुरभाई (अहमदाबाद), प.भ. प्रविण प्रहलादभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. धीरजलाल जी. सोनी (अहमदाबाद), प.भ. नवीनभाई ईश्वरभाई पटेल (नरोड), प.भ. अ.नि. काळीदास नरसीभाई पटेल (गुलाबपुरा), प.भ. अ.नि. रमणभाई बकोरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. घनश्यामभाई सोमाभाई पटेल (कलोल), प.भ. जगदीशभाई जेशंगभाई तलसाणीया (अहमदाबाद), प.भ. मृगेशभाई धीरुभाई धानाणी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. परथीजी शिवाजी (लणवा), प.भ. नीलाबा मगनजी राजपुत (लणवा) । **भादरवा वद-३** प.भ. किरीटभाई चतुरभाई पूजारा (वासणा), प.भ. अ.नि. रमणीकभाई नानजीभाई वेगड (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. लल्लुभाई जीवाभाई भलगामडीया (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-४/५** प.भ. अ.नि. चंद्रकांतभाई नटवरभाई पंचाल (अहमदाबाद), प.भ. बळदेवभाई जोईताराम चौधरी (ईश्वरपुरा-बदपुरा), प.भ. अ.नि. लालभाई चतुरभाई पटेल (अंबापुर), प.भ. विजयभाई जगदीशचंद्र त्रिवेदी (बालासिनोर), प.भ. अ.नि. कांतिभाई चतुरभाई भोरणीया (अहमदाबाद), प.भ. हिरजी हरजी वरसाणी (नारणपर-कच्छ), प.भ. अ.नि. विरजी कल्याण पाधरा, अ.नि. सुंदर विरजी (सुखपर-कच्छ), प.भ. आहान शनिकुमार पटेल (टी.पी. ४४) । **भादरवा वद-६** प.भ. अ.नि. महेन्द्रसिंह झाला (अडवाळ), प.भ. रघुवीर अमीन (अहमदाबाद), प.भ. अनि. मधुकांताबेन माणेकलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जयंतिभाई हरिभाई पटेल (जवारज), प.भ. अ.नि. नाथाभाई चतुरभाई पटेल (लसुन्द्रा), अ.नि. स.गु. शा. स्वामी हरिप्रकाशदासजी (गांधीनगर), प.भ. धनंजयभाई प्रभुदास रवाणी (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-७** प.भ. वनराज जीज्ञेशभाई पटेल (बायड), प.भ. मधुबेन नानजीभाई मकवाणा (अहमदाबाद), प.भ. प्रविणभाई अमीचंदभाई पटेल (सापावाडा), प.भ. डी.टी. आचार्य, प.भ. खुमानसिंह हेमुजी चौहाण (टांकीया), प.भ. महेन्द्रकुमार डाह्याभाई परमार (अहमदाबाद), प.भ. दिपकुमार चिमनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. रसिकभाई जादवजीभाई पटेल, सविताबेन (धरमपुर) । **भादरवा वद-७/८** अ.नि. स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी (कालुपुर मंदिर), प.भ. परसोतमभाई नारणदास पटेल (चेनपुर), प.भ. अ.नि. कोकिलाबेन जगदीशभाई गांधी (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. कैलासबेन जगदीशचंद्र त्रिवेदी (बालासिनोर), प.भ. अ.नि. घनश्यामभाई त्रिकमलाल परीख (अहमदाबाद), प.भ. परेशभाई रमणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. घनश्यामभाई गज्जर (नवावाडज), श्री उत्सव महिला गृप (साबरमती), श्री नरनारायणधेव महिला मंडळ, प.भ. विजयभाई घनश्यामभाई राठोड (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-९** प.भ. अ.नि. वंदनाबेन मिनेषभाई त्रिवेदी (सुरत), प.भ. अ.नि. प्रभाबेन नारणभाई राठोड (राजकोट), प.भ. कानजीभाई वेलाभाई पटेल (गवाडा), प.भ. मंगुबेन नरसीभाई (अहमदाबाद), प.भ. तरुणाबेन प्रविणभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. हिराबेन कानजीभाई पटेल (वालम), प.भ. अ.नि. कुमुदबेन नटवरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मनुभाई सी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. लाभुबेन परसोतमभाई लहेरी (अहमदाबाद), प.भ. शारदाबेन यु. पाटडीया (शिलज), प.भ. सोनाबेन मगनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. डॉ. उर्मिबेन पूजारी (बोटाद), प.भ. नारणभाई काळुभाई जागाणी । **भादरवा वद-१०** प.भ. अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब (अहमदाबाद), प.भ. कमळाबेन बालचंदभाई पटेल (विराटनगर), प.भ. मीनाक्षीबेन रविकांतभाई मस्की (अहमदाबाद), अमदावाद हवेली महिला मंडळ (कालुपुर), प.भ. अ.नि. मंगुबेन माणेकलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. ललीतभाई भीखाभाई धानाणी (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-११** प.भ. अश्विनकुमार कांतिलाल सोनी (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-१२** प.भ. क्रिष्णा घनश्यामभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. पुरबाई वेलजी वेकरीया (मीरजापुर-कच्छ), प.भ. जेशंगभाई लक्ष्मणभाई चौधरी (बालवा), श्री स्वामिनारायण मंदिर पासोदरा स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी, आई.एस.एस.ओ., एल.ए. समस्त हरिभक्तो परिवार, प.भ. अणदाराम गंगाराम पटेल (गुडामालानी-वाली), प.भ. अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (ओळा), प.भ. वसंतभाई कलोला (गांधीनगर), प.भ. रिध्धि आशिष भावसार (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-१३** प.भ. हरिशभाई गोरधनभाई (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. रामजीभाई नानजीभाई रामाणी (भंडारीया), प.भ. अ.नि. लक्ष्मीनारायण गिरधरदास रावल (साणंद), प.भ. अ.नि. अंबालाल नाथालाल पटेल (झुंडाल), प.भ. धनजीभाई जेटवा पेईन्टर (वडताल), प.भ. अ.नि. हसुमतिबेन हरिकृष्णभाई भावसार (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. मनुभाई भगवानभाई कुणपुरा (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-१४** प.भ. अ.नि. शोभनाबेन लक्ष्मीनारायण रावल (अहमदाबाद), प.भ. अ.नि. जगदीशचंद्र ओच्छवलाल त्रिवेदी (बालासिनोर), प.भ. प्रविणभाई रणछोडभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. सूजलभाई अल्पेशभाई भावसार (अहमदाबाद) । **भादरवा वद-३०** प.भ. निकुंजभाई नरेशभाई भालाणा (अहमदाबाद), प.भ. शैलेषभाई एन. पूजारा (अहमदाबाद), प.भ. मिनाक्षीबेन मस्की (अहमदाबाद), प.भ. प्रहलादभाई पटेल (कोठारी) (वासणा), प.भ. कांतिभाई छोटाभाई सुथार (मरतोली), प.भ. दक्षाबेन आशिष नेहल-उर्वि (अहमदाबाद), प.भ. उषाबेन एम. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. अशोकभाई शामजीभाई कणजरीया (अहमदाबाद), प.भ. दिप्तेशभाई महेन्द्रभाई पटेल (सुणाव), प.भ. अ.नि. जयंतीलाल जमनादास शाह (अमेरिका) ।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and **Published From :** Shree Swaminarayan Mandir Kalupur, Ahmedabad-380001. Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji



नारणघाट मंदिर में श्री हनुमानजी महाराज की पुन: प्राण प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





नारणपुरा मंदिर में कथा के अवसर पर सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।



त्योहार
धोळका
6 to 10 January 2027













माणेकपुर (चौधरी) मंदिर में अन्नकूट आरती उतारते संत गण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 “ Permitted to post at
Ahd Unaccountable L1 i/o. on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2024-2026
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2026





शरद पूर्णिमा को अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी के चौक में उल्लास पूर्वक रास खेलते हरिभक्त ।







प्रति पूर्णिमा को नियमित सत्संग सभा का प्रारम्भ कराते प.पू. बड़े महाराजश्री तथा सभा को दर्शन देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।





अदाणी शांतिग्राम ''मंदिर'' के प्रथम पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

प.पू. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवं भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजीबी आज्ञा से
श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलकाधाम में बिराजमान श्री मोरली मनोहरदेव श्री हरिकृष्ण महाराज का
२०० वर्ष द्विशताब्दी महोत्सव
श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका (मुख्य)
फायर स्टेशन के बगल मे – जि. अहमदाबाद
त्योहार धोळका
6 to 10 January 2027
Praful Kharsani